>

Title: Need to link Ken-Betwa river in Bundelkhand Region.

श्री वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़): सभापति महोदय, मैं शून्यकाल के माध्यम से बुंदेलखंड की कठिनाइयों की ओर सदन का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। बुंदेलखंड में पिछले पांच-छः वर्षों में कम बारिश होने के कारण पानी का संकट लगातार बढ़ता चला जा रहा है। ऐतिहासिक रूप से बुंदेलखंड प्रकृति के प्रकोपों से जूझता रहा है। यही कारण है कि बुंदेलखंड समाज एवं राजसत्ता ने तालाबों के निर्माण को प्राथमिकता दी और ऐसी फसलों को अपनाया जिनमें कम पानी लगता है। वहां भूमि ऊंची-नीची होने के कारण जब तालाब बनाने शुरू किये तो ऊपर के तालाबों को नीचे के तालाबों से नालीनुमा नहरों से ऐसे जोड़ा गया, ताकि जब ऊपर के तालाब भर जाएं तो पानी उन नालियों के माध्यम से नीचे के तालाबों की ओर बहकर चला जाए। महोदय, बुंदेलखंड तीस लाख हैक्टेअर क्षेत्र में फैला है। इनमें से 24 लाख हैक्टेअर भूमि कृषि योग्य है। परंतु इसमें से मात्र चार लाख हैक्टेअर भूमि की सिंचाई हो पा रही है। भारत में पांच वर्ष में एक बार साधारण सूखा पड़ना स्वाभाविक है। परंतु बुंदेलखंड में पिछले नौ वर्षों में आठ बार गम्भीर सूखा पड़ा है। पिछले बीस वर्षों में यहां अत्यधिक भूक्षरण हुआ है। बुंदेलखंड में छतरपुर के आसपास धसान केन नदी के पास एक लाख पांच हजार एकड़ जमीन बीहड़ हो रही है। पन्ना जिले में पचास हजार एकड़ जमीन बीहड़ का रूप ले रही है। टीकमगढ़ में 12 हजार एकड़ जमीन में बीहड़ जमा हो रहा है। दतिया में 70 हजार एकड़ तथा दमोह जिले में 62 हजार एकड़ जमीन बीहड़ की चपेट में आती दीख रही है। बुंदेलखंड में इस बीहड़ीकरण के कारण 471 गांवों के सामने अस्तित्व का खतरा पैदा हो गया है। सिंचाई सुविधाओं का अभाव होने के कारण यहां का किसान आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा है। बुंदेलखंड की सबसे महत्वपूर्ण एवं बृहद् सिंचाई परियोजना केन-बेतवा लिंक योजना नदी जोड़ो अभियान के अंतर्गत एनडीए सरकार के समय बनाई गई थी।

किन्तु राजनैतिक कारणों से केन्द्र सरकार द्वारा इस परियोजना को गम्भीरता से नहीं लिया जा रहा है। इससे सिंचाई सुविधाओं का लाभ मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के किसानों को इस योजना से मिलना था, उससे वे वंचित हो रहे हैं। दुख की बात है कि बुंदेलखंड पैकेज में भी इसकी उपेक्षा की गई है। इसलिये, मेरा आपके माध्यम से केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि नदी जोड़ो अभियान के अंर्तगत केन-बेतवा नदी जोड़ने के कार्य को प्राथमिकता से आगे बढ़ाया जाये ताकि बुंदेलखंड का किसान आत्मनिर्भर हो सके।

श्री जितेन्द्र सिंह बुन्देला (खजुराहो): सभापति जी, डॉ. वीरेन्द्र कुमार द्वारा शून्य काल में उठाये गये मामले से स्वयं को सम्बद्ध करना चाहता हूं।